पिट्स

आर.एन.आई. ३८१३९/८१

www.pits.co.in

वर्ष २१ अंक-३१ सोमवार, १८ मई २००९ पृष्ठ १६ मूल्य दो रुपये

इंदौर, मुंबई से एक साथ प्रकाशित

जिन पर फेंके गए जूते, वे सभी जीते

नई दिल्ली। यह महज इत्तेफाक की बात है कि जो राजनेता 'जूतों की मिसाइल' का शिकार बने, वे सभी इस बार चुनाव में विजयी हुए गृह मंत्री पी. चिदंबरम, भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी और उद्योगपति नवीन जिंदल चुनाव जीत गए। इन सभी पर प्रेस कांफ्रेंस या चुनाव प्रचार के दौरान जूते उछाले गए। प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की ओर भी जूता उछाला गया था लेकिन वह इस बार चुनाव नहीं लड़े हालांकि उनके नेतृत्व में कांग्रेस और यूपीए की सत्ता में शानदार वापसी हुई। कर्नाटक के मुख्यमंत्री बी.एस. येदियुरप्पा ने अपने पुत्र बी वाई राघवेंद्र के लिए जीत सुनिश्चित की। येदियुरप्पा भी 'जूता मिसाइल' का निशाना बने थे। जूता फेंकने की शुरूआत एक पत्रकार ने की थी। उसने चिदंबरम पर आठ अप्रैल को एक प्रेस कांफ्रेंस के दौरान जूता उछाला था। कर्नाटक के मुख्यमंत्री हासन में एक चुनावी सभा के दौरान जूते का निशाना बने।

15 वीं लोकसभा के परिणाम कांग्रेस के लिये वरदान साबित हुए हैं. लगभग 18 वर्षो बाद कांग्रेस ने देशभर में जोरदार जीत हासिल की है. वह भी अपने खुद के दम पर. कांग्रेस हालांकि अकेले दम पर बहुमत प्राप्त नहीं कर पाई है, परंतु जो आंकड़े कांग्रेस ने इस चुनाव में हासिल किये हैं वे अपने आपमें उत्साहवर्धक हैं. कांग्रेस द्वारा अकेले दम पर इतनी सीटें प्राप्त कर लेने से कांग्रेस के बड़े नेताओं के साथ ही युवा नेताओं में जोश भर गया है. देश की जनता ने यूपीए को भरपूर समर्थन देकर फिर सरकार चलाने का न्यौता दिया है. यह विश्वास पूर्ण बहुमत 272 से जरूर कम है फिर भी कांग्रेस को कुछ ज्यादा ताकत से राज करने का मौका देने का मतलब जनता के विश्वास की भावना है. साथ ही यह भी जनता ने जाहिर किया है कि मुंह के बड़बोले नेता और उनके राजनैतिक दल देशहित के लिये नहीं है. यह संदेश इस जनादेश से निकला है. जनता ने राहुल गांधी के नेतृत्व वाले युवा सोच की राजनीतिज्ञता को स्वीकार कर लिया है. हिलाजा म.प्र. में ही मंदसौर से मिनाक्षी नटराजन, खंडवा से अरूण यादव, गुना से ज्योतिरदित्य सिंधिया जैसे युवा नेता विजयी हुए हैं. दरअसल जनता ने किसी हवा या रूख से नहीं अपने गहन विचार से काम करने योग्य प्रत्याशियों को जीत दी और बढ़-चढ़कर बोलने वालों को हार.

सोनिया राहुल ने किया चमत्कार!

कांग्रेस 18 साल बाद फिर रंग में

पांच साल की मनमोहनसिंह सरकार के कामकाज पर कितना वोटिंग हुआ यह कहना मुश्किल है, लेकिन मनमोहनसिंह का सीधा साधा होना और गैरविवादित होना लोगों को अच्छा लगा है. काम से भले वे शेर न हों लेकिन व्यवहार से भले मनमोहन की जीत किसी सिंह से कम नहीं है. और यह पूरी कांग्रेस पार्टी की बड़ी जीत है. यूपीए को सत्ता से हटाने के लिये एनडीए के बड़े घटक भाजपा ने उग्र और तीखे तेवर दिखाए लेकिन सोनिया गांधी और राहुल गांधी की संजीदगी ने लोगों को लुभाया तथा विरोधी पार्टियों की हर चाल को नेस्तोनाबूद किया.

कांग्रेस ने उत्तर प्रदेश में चमत्कारिक प्रदर्शन किया है. वहीं भाजपा उत्तरांचल, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान में मात खा गई. पंजाब में कांग्रेस को जो जनसमर्थन मिला है वह भी कम चमत्कारिक नहीं है. जगदीश टाइटलर का टिकट छिन कर कांग्रेस ने सिखों की हमदर्दी वापस लेकर सफल कार्ड चला. अब सरकार बनाने की तैयारी कांग्रेस की 205 समेत संप्रग ने कुल 260 सीटें जीती है और 543 सदस्यीय लोकसभा में सरकार बनाने के लिए 272 का जादुई आंकडा छूने के लिए उसे सिर्फ 12 और सांसदों के समर्थन की जरूरत है। कई अन्य दलों द्वारा समर्थन की पेशकश के बीच संप्रग इस अंतर को पाटने को लेकर ज्यादा चिंतित नहीं है। संप्रग कथित रूप से जनता दल सेक्युलर जैसे छोटे दलों द्वारा समर्थन की मंशा जाहिर किए जाने और इस बार चुन कर आए 10 निर्दलीय सांसदों से समर्थन लेने के विकल्प के मद्देनजर बहुमत जुटाने को लेकर ज्यादा फिक्रमंद नहीं है। संप्रग के सूत्रों का मानना कि सरकार को बहुमत के लिए समाजवादी पार्टी जैसे दलों पर निर्भर रहने की कोई जरूरत नहीं होगी। चौथे मोर्चे के घटक दल सपा ने 23 सीटें जीती है। सपा हालांकि संप्रग को यह याद दिलाना चाहती है कि उसने परमाणु करार के मुद्दे पर वामदलों के समर्थन वापस लेने के बाद मुश्किल वक्त में सरकार का साथ देकर उसे गिरने से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी और संप्रग को कोई फैसला लेने से पहले इस बात को भी जहन में रखना चाहिये। शेष अंतिम पेज पर .....

नये चेहरों ने दिग्गजों को दी मात

प्रदेश में लोकसभा चुनाव के नतीजे कांग्रेस के लिये उत्साहवर्धक तो हैं ही, साथ ही भाजपा के लिये एक सबक भी है. इन नतीजों ने कांग्रेस को संजिवनी दी है और भाजपा को चेतावनी. चार महीने पूर्व ही हुए विधानसभा चुनाव में जहां भाजपा ने एकतरफा जीत हासिल की थी वहीं इस बार मालवा-निमाड़ अंचल में उसके पुराने चेहरे कांग्रेस के नये चेहरों के सामने टीक भी नहीं पाएं. मालवा-निमाड़ ही नहीं प्रदेश के अन्य इलाकों में भी भाजपा के अहंकार को कांग्रेस की इस जीत ने चूर-चूर कर दिया है. पश्चिम मप्र को अपना गढ़ समझने वाली

भाजपा को मुँह की खाना पड़ी. भाजपा के पके हुए दिग्गजों के मुकाबले में युवा चेहरों को उतारकर कांग्रेस ने जो प्रयोग किया, वह सफल रहा. मंदसौर, उज्जैन, देवास और खंडवा सीटों पर कांग्रेस के वही चेहरे जीते, जिन्हें पार्टी ने इस उम्मीद के साथ मैदान में उतारा था कि ये भाजपा के बरसों से जमे चेहरों पर भारी पड़ेंगे. यह एंटीइंकम्बेसी फैक्टर था, जिसे भाजपा नहीं समझी.पिछले लोकसभा चुनाव में पश्चिम मध्यप्रदेश की मात्र झाबुआ-रतलाम सीट जीतने वाली कांग्रेस ने इस बार भारी उलटफेर कर दिया.

शेष अंतिम पेज पर .....

जय हो

चमकती आंखों के साथ चेहरों पर खुशी। जागो मतदाता जागो का अलख जगाने वाले लोग खुश। इस बार लोगों ने पुरानी रिवायतों को मिल कर आखिर तोड़ ही दिया। राजनैतिक दलों को विश्वास ही नहीं हो पा रहा कि छलिये इस बार खुद ही छले गए। छले भी क्यों न जाते सब्जबागों के जरिये कब तक गृहस्थियां चला करती हैं। गृहस्थी चलाने के लिए तो ऐसा बाग चाहिए जहां भविष्य की कुछ सिक्युरिटी तो नजर आए। दो दिन पहले के मंजर थे कि आडवाणी जीत के लिए निश्चित नजर आ रहे थे। जनता ने भी ठान के रखी थी कि 82 वर्ष के इस एम्बिशियस व्यक्ति को संन्यास दिलवा ही दें। ऐसी ही स्थिति रिकॉर्ड तोड़ने का इतिहास रखने वाले पासवान की भी हुई। लालूप्रसाद को एक क्षेत्र से लोगों ने खदेड़ ही दिया, दूसरी जगह इज्जत बस बची कहना चाहिए।

कहना गलत ना होगा कि सोनिया जो गठबंधन के लिए संबंधों को मजबूत करने की स्थिति में थी, वे अब अपने

✍ उत्तम झंवर

पसंद के लोगों को चुन सकेगी। राहुल, प्रियंका का यूथ फैक्टर लोगों को पसंद आया। बहनजी(मायावती) के क्षेत्रों में भी कांग्रेस को लोगों ने हाथोहाथ लिया है। नयापन और युवा नेता की चाहता मतदाताओं को इस बार दबाव की राजनीति और डर से उबार कर ले आई। मनमोहन को डमी पीएम कहने वाले लोग चुप्पी साधे हैं। जनता ने तो अपना विश्वास उनमें ही जताया। फायनेंस मिनिस्टर के रूप में देश को आर्थिक उदारीकरण की नीतियां देने वाला यह व्यक्ति ही मंदी के दौर में विश्वास जीत सका।

वहीं इंदौर के हालात तो ऐसे कि भीतरीघात के बावजूद ताई ने परचम फहरा ही दिया। चार्जशीट बनने के बाद लोगों की असलियतों पर से परदे बेहतर उठेंगे। फिलहाल की हकीकत तो ये है कि लोगों ने भाजपा को अंचल से पूरी तरह खदेड़ दिया। मसले पाकिस्तान के हो या अमेरिका से रिश्तों के लोगों ने अपना विश्वास यूपीए को दे दिया। बदलाव की ये बयार संदेश लाई है कि जल्द ही हम मंदी, बिजली व पानी के संकटों पर ठहराव ले आएगें। मतदाता ने इस बार अपनी नींद से जागकर अधिकार का जो प्रयोग किया है वो अगली कई दशकों तक भाजपा व दूसरी छोटी पार्टियों को एहसास दिलाती रहेगी कि स्वयंहित के बजाय परहित की सोच हो तब ही राजनीति में कदम रखें। अन्यथा दिन दूर नहीं कि भारतीय लोग स्वयं नकारात्मक प्रभाव रखने वाले लोगों के आवेदन ही निरस्त कर दें।

इस शुभ शुरूआत की जय हो।